साप्ताहिक

जागत गाँव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 14-20 फरवरी 2022, वर्ष-7, अंक-46 | भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित | पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

सीएम शिवराज बोले- हमने 22 माह में एक लाख 76 हजार करोड़ किसानों के खातों में डालने का किया चमत्कार

मध्यप्रदेश में किसानों की सरकार, अन्नदाताओं के कल्याण में नहीं छोड़ेगी कोई कसर

किसानों पर धनवर्षा

संवाददाता, भोपाल।

हमने 22 माह में एक लाख 76 हजार करोड़ रुपए किसानों के खाते में डालने का चमत्कार किया है। यह किसानों की सरकार है, किसानों के कल्याण में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। प्रदेश में सिंचाई की योजनाओं का जाल बिछा कर प्रदेश के हर सूखे खेत में फसल लहलहाने के लिए राज्य सरकार निरंतर कार्यरत है। यह बात सीएम शिवराज सिंह चौहान ने बैतूल में राज्य स्तरीय फसल क्षति दावा राशि वितरण समारोह के दौरान कही। मुख्यमंत्री ने किसानों के खाते में खरीफ 2020 और रबी 2020-21 की 49 लाख दावों में 7618 करोड़ रुपए की राशि का सिंगल क्लिक से डाली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में देश में सबसे बड़ी 7618 करोड़ रुपए की सहायता राशि का वितरण सिंगल क्लिक से किया गया है। इससे पूर्व भी फसलें खराब होने पर 2876 करोड़ किसानों के खाते में डाले गए थे। किसानों को राज्य सरकार द्वारा अब तक 10 हजार 494 करोड़ की सहायता राशि जारी की गई है।

कमलनाथ ने नहीं दिया था प्रीमियम- सीएम ने कहा कि पूर्व की कमलनाथ सरकार ने बीमा कंपनियों को प्रीमियम की राशि नहीं दी थी। परिणामस्वरूप किसानों को बीमा की राशि नहीं मिल पाई। पूर्व की सरकारों ने फसल खराब होने पर सर्वे तक नहीं कराया, जबकि वर्तमान में राज्य सरकार ने केवल बैतूल जिले में ही एक लाख 28 हजार 474 किसानों को 306 करोड़ 78 लाख से अधिक राशि पीएम बीमा योजना में उपलब्ध कराई है।

प्रति मोटर 51 हजार दिया अनुदान

राज्य सरकार ने किसानों को जीरो प्रतिशत ब्याज पर ऋण देने के लिए बैंकों को 29 हजार 834 करोड़ उपलब्ध कराए हैं। बिजली कनेक्शन पर प्रति मोटर 51 हजार का अनुदान राज्य सरकार द्वारा दिया जाता है। सरकार ने 47 हजार किसानों की ओर से बिजली कंपनियों को 30 हजार करोड़ उपलब्ध कराए हैं।

जब भावनाएं ठीक होती हैं तो लक्ष्मी जी भी कृपा करती हैं। दुनिया में जैविक खेती की डिमांड बढ़ रही है। अगर किसान अपने खेत में दो मेगावाट तक का सोलर यूनिट लगाते हैं तो उससे बनने वाली बिजली 3 रुपए 15 पैसे के भाव में खरीदेंगे। ग्रामीण अपने गांव का गौरव दिवस मनाएं। गांव का मास्टर प्लान बनाएं।
शिवराज सिंह चौहान, सीएम

यह पहला अवसर है जब प्रदेश के 49 लाख से अधिक किसानों को 7618 करोड़ की फसल बीमा राशि उनके खातों में जमा की गई है। किसानों को आज तकनीक से जोड़ने की जरूरत है। केन्द्र ने इसके लिए ड्रोन पॉलिसी जारी कर दी है। ड्रोन खरीदने की इच्छुक संस्थाओं को अनुदान भी उपलब्ध कराया जाएगा।
नरेंद्र सिंह तोमर केंद्रीय कृषि मंत्री

प्रदेश सरकार गांव, गरीब और किसान हितैषी है। प्रधानमंत्री का किसानों की आय दोगुना करने का संकल्प है। मप्र लगातार सात साल से कृषि कर्मण पुरस्कार पा रहा है। यह सब किसानों की मेहनत से ही संभव हुआ है। खेती को लाभ का धंधा बनाकर प्रदेश का नाम रोशन करने किसानों का भी सहयोग जरूरी है।
कमल पटेल, कृषि मंत्री

किसान सम्मान निधि संजीवनी

सीएम ने पीएम का किसान सम्मान निधि उपलब्ध कराने के लिए आभार मानते हुए बताया कि प्रधानमंत्री ने केवल मध्य प्रदेश को इस योजना में 10 हजार 333 करोड़ उपलब्ध कराए हैं। प्रधानमंत्री की प्रेरणा से ही सरकार द्वारा भी किसानों को 4 हजार किसान सम्मान निधि के रूप में उपलब्ध कराए गए। निश्चित रूप से छोटे किसानों के लिए 10 हजार संजीवनी के समान है।

उद्यानिकी फसलों को 193 करोड़

अब तक 4779 करोड़ किसानों के खाते में डाले जा चुके हैं। पिछले साल खरीफ की फसल में जो नुकसान हुआ था इसके लिए दो हजार 876 करोड़ किसानों के खाते में डाले गए। सहकारी बैंकों की स्थिति सुधारने के लिए 800 करोड़ की राशि बैंकों को उपलब्ध कराई गई। खरीफ के लिए दो लाख 88 हजार किसानों को उद्यानिकी फसलों के लिए 193 करोड़ फसल बीमा के दिए गए।

बैंकों ने 1583 करोड़ कर्ज दिया

सोलर पंप अनुदान योजना में 72 करोड़ किसानों की ओर से जमा किए गए। एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड के अंतर्गत 1583 करोड़ का लोन बैंकों द्वारा दिया गया। गेहूं, धान, ज्वार, चना, सरसों, मसूर, मूंग, उड़द और अन्य फसलों की खरीद पर किसानों के खाते में 75 हजार करोड़ डाले गए। यह 22 माह का हिसाब है। इस प्रकार पिछले 22 महीनों में एक लाख 64 हजार 737 करोड़ किसानों के खातों में डाले गए हैं। इसमें यदि उक्त राशि को जोड़ दिया जाए तो किसानों के खातों में एक लाख 76 हजार करोड़ जारी किए गए।

सिंचाई पर खर्च करेंगे 66 हजार करोड़

पूर्व की सरकार ने किसानों का केवल 6000 करोड़ का ऋण माफ किया था। इसमें से भी आधे की जिम्मेदारी बैंकों और सोसाइटी पर डाल दी गई थी, परिणाम स्वरूप किसानों का ऋण माफ ही नहीं हुआ था। राज्य सरकार प्रदेश में आगामी वर्षों में सिंचाई की व्यवस्था पर 66 हजार करोड़ खर्च करेगी। एक-एक बूंद पानी का सही उपयोग सुनिश्चित करने के लिए नहरों की बजाए पाइप लाइन से पानी की आपूर्ति खेतों में की जाएगी, जिससे किसान स्प्रिंकलर और ड्रीप का उपयोग कर अपनी फसल लहलहा सकेंगे।

प्राकृतिक खेती का आह्वान

मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में नवाचार अपनाने की जरूरत है। प्रदेश में प्राकृतिक खेती, ड्रोन के उपयोग को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करते हुए कहा कि युवा वर्ग कस्टम हायरिंग सेंटर, कोल्ड स्टोरेज, गोडाउन आदि बनाने की ओर अग्रसर हों, राज्य सरकार द्वारा हर संभव सहायता की जाएगी। सौर ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में किसानों को आगे आना चाहिए। जिन किसानों की पथरीली जमीन है, वे यदि अपने खेत पर 2 मेगा वाट के सोलर संयंत्र लगाते हैं, तो राज्य सरकार उनसे 3.15 रुपए प्रति यूनिट की दर से बिजली खरीदेगी।

-मध्य प्रदेश में फसल नुकसान का सर्वे 25 जिलों में हुआ पूरा

ओला पीड़ित किसानों को मिलेगी राहत

संवाददाता, भोपाल।

राज्य सरकार ने ओलावृष्टि से हुए फसल के नुकसान का सर्वे पूरा कर लिया है। अब एक साथ 25 जिले के प्रभावित किसानों को राहत राशि बांटने की तैयारी चल रही है। लगभग एक लाख 71 हजार 990 किसानों को पौने तीन सौ करोड़ की राहत राशि बांटी जाएगी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी मुआवजा वितरण जल्द किए जाने के संकेत दिए हैं। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट कर नौ जनवरी को सभी कलेक्टरों को निर्देश दिए थे कि ओलावृष्टि से हुए फसल नुकसान का तत्काल सर्वे कर राहत राशि दी जाए। इसके लिए एक सप्ताह का समय तय किया गया था। मध्य प्रदेश में ओलावृष्टि से रबी फसलों को पहुंचे नुकसान का सर्वे 25 जिलों में पूरा हो गया है।

किसानों की फसल बर्बाद

राहत आयुक्त कार्यालय द्वारा सभी जिलों की रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है। आकलन के मुताबिक फसल नुकसान का क्षेत्र (रकबा) एक लाख 64 हजार 566 हेक्टेयर क्षेत्र की फसल में नुकसान होना पाया गया है। 70 तहसीलों के एक हजार 192 गांवों के एक लाख 71 हजार 990 किसानों की फसल को क्षति हुई है।

सर्वे का काम हुआ पूरा

राहत के लिए 277 करोड़ की राशि सभी जिलों में किसानों को एक साथ सिंगल क्लिक के जरिए भेजी जाएगी। राजस्व विभाग के प्रमुख सचिव मनीष रस्तोगी ने बताया कि सर्वे का काम पूरा कर लिया गया है। सभी जिलों में ट्रेजरी में एक साथ बिल लगाकर राहत राशि जल्द बांटने की तैयारी चल रही है।

मप्र के कृषि विश्वविद्यालयों में अब होगी जैविक खेती

भोपाल। केंद्र और राज्य सरकार ने इस साल प्रदेश में 99 हजार हेक्टेयर में जैविक खेती का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को पूरा करने में प्रदेश के दोनों कृषि विवि सरकार का सहयोग करेंगे। इन विश्वविद्यालयों में 25-25 हेक्टेयर भूमि जैविक खेती के लिए आरक्षित की गई है। जैविक खेती कृषि पाठ्यक्रम में भी शामिल होगी। प्रदेश के कृषि विवि जैविक खेती करने के साथ-साथ किसानों को प्रशिक्षण भी देंगे। प्रदेश के दोनों विश्वद्यिालयों से संबंध कृषि महाविद्यालयों में भी जैविक खेती कराई और पढ़ाई जाएगी।

देश की 40 प्रतिशत जैविक खेती मप्र में- प्रदेश में 17.31 लाख हेक्टेयर जमीन पर जैविक खेती की जा रही है, जो देश की कुल जैविक खेती का 40 प्रतिशत है। जैविक खेती में मप्र देश में नंबर वन है।

हमारा लक्ष्य जैविक खेती को बढ़ावा देना है। किसानों को प्रेरित करने के लिए कृषि विवि में जैविक खेती को आदर्श प्रदर्शन क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाएगा। पाठ्यक्रमों में भी जैविक खेती को शामिल किया जा रहा है।
- कमल पटेल, कृषि मंत्री

ग्वालियर ननि को होगी 6.38 करोड़ की आय, अब लालटिपारा आदर्श गौशाला जल्द ही आत्मनिर्भर बनेगी

गौशाला में लगेगा 100 टन की क्षमता का सीएनजी प्लांट

दिव्या मिश्रा, ग्वालियर।

नगर निगम की लालटिपारा आदर्श गौशाला जल्द ही आत्मनिर्भर बनेगी। इसके लिए गौशाला में 100 टन की क्षमता वाला सीएनजी प्लांट लगाया जा रहा है। इसके लिए इंडियन आयल कारपोरेशन के अधिकारियों ने गौशाला का सर्वे किया। इस प्रोजेक्ट की लागत 31 करोड़ रुपए है। यह राशि इंडियन आयल कारपोरेशन खर्च करेगा। प्लांट लग जाने के बाद हर दिन 2500 किलो सीएनजी गैस का उत्पादन होगा। इससे निगम की हर साल लगभग छह करोड़ 38 लाख रुपए की आय होगी। प्लांट लग जाने से स्वच्छ सर्वेक्षण में भी शहर को अच्छे अंक मिलेंगे, क्योंकि इस प्लांट में गीला कचरा एवं शहर की डेयरियों से निकलने वाले गोबर का निस्तारण हो सकेगा। इतना ही नहीं गौशाला लगभग चार करोड़ रुपए की खाद भी बेच सकेगी। नगर निगम की लालटिपारा आदर्श गौशाला में सीएनजी प्लांट लगाया जाना है। इसके लिए इंडियन आयल कारपोरेशन की टीम ने सर्वे किया। गौशाला में पहले 50 टन का प्लांट लगाया जाना था, लेकिन निगम आयुक्त ने शहर की डेयरियों से गोबर को एकत्रित कराना शुरू कर दिया है। इससे गोबर की मात्रा बढ़कर दोगुनी हो चुकी है।

दुगुनी क्षमता वाला प्लांट लगने पर सहमति

गौशाला में गोबर की मात्रा को देखकर टीम ने दोगुनी क्षमता वाला सीएनजी प्लांट लगाने पर सहमति दी है। इसके साथ ही शहर की सब्जी मंडियों एवं आमजनों के घरों से निकलने वाले जैविक कचरे, जिनमें सब्जी, फलों के छिलके आदि शामिल हैं, उससे भी सीएनजी बनाई जाएगी। निरीक्षण के दौरान नोडल अधिकारी पवन सिंघल और ऋषभदेवानंद महाराज आदि मौजूद थे।

बायो सीएनजी प्लांट बनेगा

गौशाला में 5 एकड़ भूमि पर लगभग 31 करोड़ की लागत से 100 टन क्षमता का बायो सीएनजी प्लांट बनाया जा रहा है। यह प्लांट कंपनी द्वारा सीएनजी मद से बनाया जा रहा है, जिसमें निगम द्वारा कोई खर्चा नहीं किया जाएगा। प्लांट का संचालन एवं संधारण नगर निगम ग्वालियर द्वारा किया जाएगा। प्लांट से निकलने वाली गैस का उपयोग निगम द्वारा किया जाएगा।

मुख्य बिंदुओं पर नजर

- इंडियन आयल कारपोरेशन द्वारा निशुल्क प्लांट तैयार किया जाएगा।
- नगर निगम, पानी, बिजली प्लांट को निशुल्क उपलब्ध कराएगा।
- संधारण एवं रखरखाव ग्वालियर नगर निगम करेगा।
- सीएनजी बेचने से जो आय होगी वह नगर निगम को मिलेगी।
- इस आय से नगर निगम गौशाला का खर्च निकाल सकेगा।
- सीएनजी बनने के बाद बचे हुए गोबर का उपयोग जैविक खाद में होगा।
- जैविक खाद की बिक्री से करीब चार करोड़ रुपए की आमदनी होगी।

लाल टिपारा आदर्श गौशाला को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में नगर निगम द्वारा एक और कदम बढ़ाया जा रहा है। गौशाला में अब सीएनजी प्लांट बनेगा। जिससे चंबल क्षेत्र में जैविक खेती को तो लाभ होगा ही साथ ही हरित ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा।
किशोर कन्याल, आयुक्त नगर निगम, ग्वालियर

सरकार किसानों के विकास को प्राथमिकता में लेकर कार्य कर रही है

2 साल में 26 हजार करोड़ के ऋण शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर दिया

संवाददाता, भोपाल।

मध्य प्रदेश में किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर फसल ऋण दिया जा रहा है। पिछले वर्ष कृषकों को खेती के लिए मात्र 1273 करोड़ का फसल ऋण मिला था। इस वर्ष किसानों को 14 हजार 428 करोड़ रुपए के ऋण उपलब्ध कराए जा चुके हैं। पिछले दो वर्ष में किसानों को 26 हजार करोड़ के ऋण शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर दिए गए हैं। सरकार किसानों के विकास को प्राथमिकता में लेकर कार्य कर रही है। प्रदेश को कृषि उत्पादन तथा योजना संचालन क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए सात कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त हुए हैं। किसानों की मेहनत का ही परिणाम है कि प्रदेश आज दलहन-तिलहन के क्षेत्र और उत्पादन में देश में प्रथम है। सोयाबीन, उड़द के उत्पादन में मध्य प्रदेश, देश में पहला स्थान रखता है, जबकि गेहूं, मसूर, मक्का एवं तिल फसल के क्षेत्र एवं उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है। सम्पूर्ण खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में प्रदेश का देश में तीसरा स्थान है। किसानों की मेहनत को देखते हुए मध्यप्रदेश ने देश में सबसे पहले कृषि को लाभदायी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए थे। इसके तहत मुख्य तौर पर पांच विषयों पर कार्य करना था, जिसमें कृषि लागत में कमी, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, कृषि विविधीकरण, उत्पाद का बेहतर मूल्य और कृषि क्षेत्र में आपदा प्रबंधन पर संकल्पित होकर कायज किया गया। 2004-05 में प्रदेश का कुल कृषि उत्पादन मात्र 2 करोड़ 38 लाख मी.टन था जो वर्ष 2020-2021 में बढ़कर 6 करोड़ 69 मी. टन हो गया है।

जैविक और प्राकृतिक खेती

प्रदेश में जैविक खेती का कुल क्षेत्र लगभग 16 लाख 37 हजार हेक्टेयर है जो देश में सर्वाधिक है। जैविक उत्पाद का उत्पादन 14 लाख 2 हजार मी.टन रहा, जो क्षेत्रफल की तरह ही देश में सर्वाधिक है। जैविक खेती को प्रोत्साहन स्वरूप प्रदेश में कुल 17 लाख 31 हजार क्षेत्र हेक्टेयर जैविक प्रमाणिक है, जिसमें से 16 लाख 38 हजार एपीडा से और 93 हजार हेक्टेयर क्षेत्र, पीजीएस से पंजीकृत है। प्रदेश ने पिछले वित वर्ष में 2683 करोड़ रुपए के मूल्य के 5 लाख मी.टन से अधिक के जैविक उत्पाद निर्यात किए हैं। प्रदेश में जैविक वनोपज भी ली जा रही है। इस वर्ष प्रदेश में 99 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती का लक्ष्य है। प्रदेश के कृषि विवि के पाठ्यक्रम में जैविक/प्राकृतिक खेती को शामिल करने की योजना है। दोनों कृषि विवि में कम से कम 25 हेक्टेयर भूमि को प्राकृतिक खेती प्रदर्शन श्रेत्र में बदला जाएगा।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

वर्ष 2016 से प्रारम्भ प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए प्रदेश के वार्षिक बजट में 2200 करोड़ की राशि का प्रावधान है। प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में कुल वर्षवार 4 करोड़ 43 लाख 61 हजार 570 किसान खरीफ 2016 से रबी 2021-22 तक (पांच वर्षों में) पंजीकृत हुए। वर्तमान समय तक 73 लाख 69 हजार 614 किसानों को रबी 2019-20 तक की राशि 16 हजार 750 करोड़ 87 लाख का दावा राशि का वितरण किया गया है। यह प्रीमियम से दावा राशि का 93.41 प्रतिशत है। फसल बीमा का एंड-टू-एंड कम्प्युटराईजेशन प्रक्रियाधीन है। बीमा इकाई निर्धारण की प्रक्रिया भू-अभिलेख के साथ एकीकृत कर पूरी तरह ऑनलाईन है। औसत उपज उत्पादन के आकलन में रिमोर्ट सेंसिंग तकनीक के उपयोग की परियोजना प्रारंभ की गई है।

प्रमाणीकरण बीज में अग्रणी मध्यप्रदेश

प्रदेश देश में बीज प्रमाणीकरण में अग्रणी है। बीज की गुणवत्ता के लिए क्यूआर कोड के प्रयोग का नवाचार किया गया है। किसानों की भागीदारी से संकर बीजों का उत्पादन कर प्रदेश को हाइब्रीड बीज उत्पादन का हब बनाया जा रहा है। प्रत्येक संभाग में एक के मान से दस उर्वरक और बीज परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है। उन्नत बीजों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए रोलिंग प्लान को अद्यतन किया गया है। तीन हजार नए बीज ग्राम विकसित किए जा रहे हैं।

किसानों को रुझान बढ़ाने नाबार्ड ने शुरू किया जीवा अभियान

देश के 11 राज्यों में प्राकृतिक खेती को दिया जाएगा बढ़ावा

संवाददाता, भोपाल। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक ने हाल ही में पर्यावरण के अनुकूल खेती को बढ़ावा देने के लिए जीवा कार्यक्रम का आयोजन किया, जो नाबार्ड द्वारा चल रहे वाटरशेड और वाडी (आदिवासी विकास परियोजनाओं) कार्यक्रमों के तहत 11 राज्यों में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देगा। नाबार्ड के चेयरमैन जीआर चिंताला ने कहा कि जीवा जल विभाजक कार्यक्रम कई परियोजनाओं की परिणति है। इसे 11 राज्यों में हमारे मौजूदा पूरी हो चुकी या पूरा होने के करीब पहुंचे वाटरशेड और वाडी कार्यक्रमों के तहत लागू किया जाएगा। इसमें पांच भौगोलिक क्षेत्र शामिल हैं। ये क्षेत्र पर्यावरण के हिसाब से नाजुक और वर्षा सिंचित क्षेत्र हैं। जीवा का उद्देश्य टिकाऊ आधार पर पारिस्थितिकी अनुकूल कृषि के सिद्धांतों को सुनिश्चित करना है और किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित करना है। इसका कारण यह है कि इन क्षेत्रों में व्यावसायिक खेती काम नहीं कर सकती है। हम इस कार्यक्रम के तहत प्रति हेक्टेयर 50,000 रुपए का निवेश करेंगे। जीवा कार्यक्रम को 11 राज्यों में 25 परियोजनाओं में पायलट आधार पर लागू किया जाएगा।

नाबार्ड करेगा गठजोड़

नाबार्ड जीवा के लिए राष्ट्रीय और बहुपक्षीय एजेंसियों के साथ गठजोड़ करेगा। चिंताला ने कहा कि नाबार्ड ऑस्ट्रेलिया स्थित कॉमनवेल्थ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च ऑर्गनाइजेशन के साथ साधारण मिट्टी के पानी की निगरानी करेगा। इसके साथ ही भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के साथ अनुसंधान सहायता के साथ प्राकृतिक कृषि गतिविधियों के वैज्ञानिक सत्यापन के लिए सहयोग करेगा।

जलवायु परिवर्तन बड़ी चुनौती

नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक चुनौती है और अब इसके बारे में सोचना काफी नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें इससे निपटने को लेकर कदम उठाने की जरूरत है। हमें कार्बन को वापस मिट्टी में डालने के उपाय करने की जरूरत है। मुझे प्राकृतिक खेती को छोड़कर अब तक किसी अन्य तकनीक के बारे में पता नहीं है जो ऐसा कर सके।

-नौकरी के साथ-साथ कर रहे जैविक खेती, किसानों नि:शुल्क प्रशिक्षण भी दे रहे

आपदा को बनाया अवसर, तीन दोस्तों का जैविक खेती माडल बना मिसाल

दीपक गौतम, सतना।

जिले के तीन युवक संजय, शर्मा, हिमांशु चतुर्वेदी और अभिनव तिवारी के साझे प्रयास से कामधेनु कृषक कल्याण समिति के जरिए स्थानीय जैतवारा-बिरसिंहपुर रोड में एक मॉडल जैविक खेत का विकास किया जा रहा है। इस संस्था के माध्यम से कृषि के पारंपरिक तरीके से हटकर प्राकृतिक एवं गौ-आधारित खेती करने का हुनर सिखाया जा रहा है। ये तीनों एक ही विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर कृष्ण नगर के पूर्व छात्र रहे हैं। इनमें से एक पश्चिम मध्य रेलवे में ट्रेन मैनेजर, एक अंतर्राष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत और एक बीएसएनएल में एसडीओ हैं। तीनों नौकरी के साथ-साथ अपने पूर्वजों की मूल पहचान और समाज में बदलाव के उद्देश्य को लेकर बचे समय में जैविक खेती और कृषकों को उन्नत करने में जुटे हैं। किसी भी खेत को शत-प्रतिशत जैविक खेत एक वर्ष में नहीं किया जा सकता। इसके लिए क्रमिक रूप से कई वर्षों तक प्रयास की जरूरत होती है। केमिकल का उपयोग धीरे-धीरे कम करके खेत को फिर से उर्वर किया जा सकता है।

इस मिशन की शुरुआत फार्मा कम्पनी में कार्यरत हिमांशु चतुर्वेदी ने सरकार की योजनाओं की सहायता से की। उन्होंने काम करते समय पाया कि पिछले कई वर्षों में दवा कम्पनियों के मुनाफे और गंभीर बीमारियों (कैंसर, शुगर, ब्लड-प्रेशर) में बेतहाशा वृद्धि हुई है। उन्होंने सोचा कि क्यों न लोगों को दवाई अधिक खरीदने की बजाय अच्छा भोजन प्रदान किया जाए, जो बीमारियों का मूल कारण है।

स्तर पर बनाई पहचान

पिछले 2 वर्ष में कोविड लॉकडाउन में समय का सदुपयोग करते हुए तीनों दोस्तों ने खेती के जैविक तरीके से स्थानीय स्तर पर पहचान बनाई। शुरू में इन्होंने बगहा स्थित केशव माधव गौशाला से जैविक कृषि की शुरुआत की। अब बड़े स्तर पर बमुरहा में यही काम कर रहे हैं। केन्द्र में कई जैविक उत्पादों की बिक्री जैसे हल्दी, प्याज, आलू, ढेंचा, वर्मी कम्पोस्ट, केंचुए, जैविक सब्जियां आदि पैदा करने के साथ समय-समय पर नि:शुल्क ट्रेनिंग भी होती है।

उद्यानिकी विभाग से लिया लाभ

सतना स्थित उद्यानिकी विभाग के माध्यम से इन लोगों ने कई योजनाओं का लाभ लिया है, जिनमें उन्नत बीज, पौधों, वर्मी कम्पोस्ट यूनिट और सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर आदि प्रमुख हैं। मझगवां स्थित केवीके भी जैविक खेती और कृषकों को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

-शिमला मिर्च से दो लाख की हुई आमदनी, किसानों के लिए बने उदाहरण

बागवानी फसलों की खेती ने शशांक को दी नई पहचान

अजय त्रिपाठी, कटनी।

जिले की बहोरीबंद तहसील के खड़रा निवासी युवा किसान शशांक पटेल ने परंपरागत खेती की राह को छोड़ा, जिसका नतीजा यह है कि वो अब अच्छा पैसा कमा रहे हैं। सरकार की योजनाओं का लाभ लेते हुए बागवानी फसलों की ओर रुख कर अच्छा खासा मुनाफा कमाया है। परंपरागत खेती करते रहे शशांक से बागवानी विभाग के अधिकारियों ने संपर्क किया और राष्ट्रीय कृषि विस्तार योजना में कलस्टर आधारित संरक्षित खेती की जानकारी दी। पारंपरिक खेती में कम होती कमाई की समस्या के बीच सरकार फसल विविधीकरण के लिए फोकस कर रही है। ताकि खेती में इनपुट कॉस्ट कम लगे। इनकम में वृद्धि हो और कम पानी की खपत हो। यही नहीं, नई तकनीक के जरिए कम जगह में ज्यादा पैदावार हो। लेकिन बहुत कम किसान पारंपरिक खेती और को छोड़ पा रहे हैं, लेकिन जो लोग परंपरागत पद्धति को त्यागकर नई तकनीक अपना रहे हैं उन्हें खूब मुनाफा हो रहा है। ऐसे ही एक किसान हैं कटनी जिले के किसान शशांक पटेल। ये उन किसानों के लिए एक उदाहरण बनकर उभरे हैं जो खेती के तौर-तरीके बदलने के लिए राजी नहीं दिख रहे हैं।

शुरू की शिमला मिर्च की खेती

जब संरक्षित खेती के जिए पटेल तैयार हो गए तब उन्हें योजना का लाभ दिया गया। उन्हें शेडनेट हाउस के लिए 28 लाख 40 हजार रुपए की सहायता उपलब्ध करवाई गई। इसमें 14 लाख 20 हजार का अनुदान शामिल रहा। शशांक ने चालू वित्तीय वर्ष में ही एक एकड़ कृषि भूमि पर शेडनेट का निर्माण करवा कर शिमला मिर्च की खेती शुरू की। एक साल में तीन बार की गई तुड़ाई में उन्हें पहली बार में 113 किलो, दूसरी बार में 56 किलो और तीसरी बार में 140 किलो शिमला मिर्च प्राप्त हुई। इस मिर्च को बेचने से शशांक को 2 लाख रुपए की आय हुई।

कंट्रोल वातावरण में खेती

इस समय बागवानी फसलों की खेती के क्षेत्र में शंशाक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। उनका कहना है कि कम मेहनत में इतनी आमदनी उन्होंने पहली बार प्राप्त की है। राज्य सरकार के सहयोग से किए गए उनके इस इनोवेशन को देखने आस-पास के किसान भी आ रहे हैं। वे बागवानी खेती के लिये प्रेरित हो रहे हैं। संरक्षित खेती आधुनिक तकनीक की वह कृषि पद्धति है जिसमें कंट्रोल वातावरण में किसी फसल की खेती की जा सकती है। इसमें कीट अवरोधी नेट हाउस होता है और ड्रिप इरीगेशन का इस्तेमाल होता है।

खेती में लगा मन, छोड़ा पलायन का विचार

आधुनिक खेती अपना कर कर रहे कमाई

कपिल सूर्यवंशी, सीहोर।

परंपरागत खेती के साथ ही फल और सब्जी की खेती से किसान दिनेश लोधी ने अपनी आमदानी बढ़ा ली है। जितना लाभ गेहूं, चना तथा सोयाबीन की खेती से होता था उससे कहीं अधिक लाभ फलों और सब्जी की खेती हो रहा है। जहांगीरपुर निवासी किसान दिनेश लोधी ने बताया कि मेरे परिवार में कुल तीन हेक्टेयर कृषि भूमि है। मेरे परिवार में हम चार भाई है और सभी पहले से परम्परागत रूप से गेहूं, चना व सोयाबीन की खेती करते थे। इस खेती में प्राकृतिक आपदा के दौरान बहुत नुकसान उठाना पढ़ता था। परंपरागत खेती से आय में लगातार कमी आने के कारण पलायन की स्थिति निर्मित हो गई थी। दिनेश ने बताया कि किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग की आत्मा परियोजना के तहत आयोजित कृषक संगोष्ठी कार्यक्रम में शामिल हुआ। इस संगोष्ठी में शामिल होने के बाद मैंने पलायान का विचार त्याग दिया और नए ढंग से खेती करने का विचार किया। इस संगोष्ठी में आए कृषि विभाग के वैज्ञानिकों व अधिकारियों ने फसल विविधीकरण पर विस्तृत तकनीकी जानकारी प्राप्त की। मैंने कृषि फसलों के साथ-साथ उघानिकी फसलों विशेष रूप से बागवानी फसलों अमरूद, मौरिंगा की खेती करन तय किया और दो वर्ष पूर्व एक एकड़ रकबे में पिंक ताईवान नामक अमरूद के पौधे लगाए। इसके एक साल बाद दो

एकड़ में वीएनआर के अमरूद व ओडीसी किस्म के मौरिंगा के पौधे लगाए। दिनेश ने बताया कि इस वर्ष मुझे एक एकड़ रकबे से दो लाख 40 हजार रुपये की अमरूद की फसल से आय प्राप्त हुई। अभी वर्तमान में चार एकड़ में कृषि फसलें व 3 एकड़ में उद्यानिकी फसलों की खेती की जा रही है। आगले साल पूरे तीन हेक्टेयर भूमि पर उद्यानिकी फसलों की खेती करने का मन बनाया है।

नई टेक्नोलॉजी से खेती ने बना दिया आत्मनिर्भर

शिवपुरी के भगवान ने खेती से की आय दोगुनी

खेमराज मौर्य, शिवपुरी।

किसान की आय को दोगुना करने के लिए सरकार लगातार कोशिशें कर रही है। आंकड़ों में भले ही किसानों की आय दोगुनी ना हुई हो, लेकिन किसान खुद ठान ले तो अपनी आय बढ़ाने के लिए अलग-अलग कृषि पद्धतियों को जरिया बना सकता है। नई टेक्नोलॉजी से खेती करने वाले कई किसान अपनी आय को दोगुना करने में सफलता हासिल कर चुके हैं। नई टेक्नोलॉजी से खेती करना कोई रॉकेट साइंस नहीं है, बल्कि अपनी जमीन की उर्वरा शक्ति पहचान कर और क्रॉप साइकिल में बदलाव करते हुए आय को आसानी से दोगुना किया जा सकता है। शिवपुरी के ऐसे ही किसान भगवान सिंह ने नई टेक्नोलॉजी से खेती करके अपनी आय को दोगुना किया है।

कुछ इस तरह से डबल हुई कमाई

शिवपुरी के ग्राम सतेरिया निवासी युवा किसान भगवान ने बताया कि इस समय में भी किसानों द्वारा पुराने समय से चली आ रही पद्धति के अनुसार खेती की जा रही है। जिसके तहत किसान गेहूं, चना, सरसों की ही फसलें करते हैं। इस पुरानी परम्परागत पद्धति से फसल करने से आय सीमित ही रह जाती है। इस पुरानी पद्धति को न अपनाकर नवीन पद्धति से खेती की है। जिसमें खेत में रुटिन फसलों के साथ-साथ टमाटर, लहसुन, प्याज और साथ में फूलों की खेती भी की। इन फसलों की खेती साथ में करने से उनकी आय लगभग दोगुना से ऊपर है।

अन्य किसानों से आह्वान

किसान भगवान सिंह ने बताया कि 2016-17 में कृषि से मुझे प्रति हेक्टेयर 40 से 50 हजार के आस पास आय हो जाती थी। अब 2021-22 में नवीन प्रयोग करके मेरी आय प्रति हेक्टेयर लगभग 1 लाख से भी ऊपर है। उन्होंने अन्य किसानों से भी आह्वान किया है कि नवीन पद्धति का प्रयोग करके कृषि वैज्ञानिकों से विचार-विमर्श उपरांत अच्छे बीज का चयन कर खेती करें। निश्चित ही इससे आपकी पैदावार दोगुनी होगी। इससे कृषि परंपरागत कृषि ना रहकर लाभ का धंधा बनेगी और किसानों की आय बढ़ेगी।

अन्नदाताओं की खुशहाली का स्वर्णिम मध्यप्रदेश

कमल पटेल
मध्य प्रदेश के किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री

अन्नदाताओं की खुशहाली और बेहतरी के लिए नित नए आयाम स्थापित करता हुआ हमारा मध्यप्रदेश प्रगति का स्वर्णिम इतिहास गढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अन्नदाताओं के प्रति असीम स्नेह सरकार की योजनाओं में भी निरंतर दिखाई पड़ता है। देश का हृदयस्थल मप्र प्रधानमंत्री के सपनों को साकार करने के लिए कृत संकल्पित रहा है। खास कर पिछले 15 महीनों में हमने देश में अग्रणी रहकर हमारे अन्नदाताओं को लाभ दिया है। बीते वर्ष खरीफ फसल 2020 व रबी फसल 2020-21 मे किसानों को प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा था जिस कारण किसानों की फसलों को नुकसान पहुंचा था। हमने रविवार को भी बैंक खुलवाकर किसानों की फसलों का बीमा करवाया। आज किसानों के चेहरों पर चमक है, क्योंकि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बैतूल में आज 49 लाख बीमा दावों की 7 हजार 6 सौ 15 करोड़ रुपयों की राशि का 49 लाख 85 हजार किसानों को भुगतान कर चुके हैं। किसानों को सरकारी योजनाओं की सुविधाओं के साथ बीमा का लाभ मिलने लगा तो अन्नदाताओं ने भी कृषि उत्पादन में शानदार परिणाम देकर हमारे प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। किसानों के उत्थान के लिए भारत सरकार ने एफपीओ योजना लागू की है। इस योजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश के हजारों किसान लाभान्वित हों रहे हैं। प्रदेश में किसानों को निरंतर एफपीओ के माध्यम से जोड़ा जा रहा है। प्राकृतिक आपदाओं और मानसून की बेरूखी से होने वाले नुकसान के समय में सरकार के किसानों के साथ खड़े होने से प्रदेश का कृषि परिदृश्य लगातार बेहतर हुआ। मप्र के मुखिया और कृषि मंत्री दोनों ही किसान होने का ही प्रतिफल है कि आज एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड में 938.84 करोड की राशि हितग्राहियों के खाते में वितरित कर मध्य प्रदेश राशि व्यय करने में प्रथम स्थान पर है। आज मध्य प्रदेश जैविक खेती के मामले में नंबर वन स्थान पर है देश में 40 फीसदी से अधिक जैविक खेती मप्र में हो रही है। वर्तमान में प्रदेश में 17.31लाख हेक्टेयर में जैविक खेती की जा रही है। जैविक खेती के प्रोत्साहन के लिए 99 हजार हेक्टेयर में भारतीय प्राकृतिक कृषि के क्लस्टर भी क्रियान्वित किए जा रहे हैं। खाद्यान्न फसलें, दलहन, तिलहन, सब्जियां तथा बागान वाली वाली फसलों के उत्पादन को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। इन सब फसलों में जैविक खेती को बढ़ावा मुख्यत: उपभोक्ता को बेहतर पोषण उपलब्ध कराने के लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर दिया जा रहा है। प्रदेश में ओलावृष्टि से फसलों के नुकसान के साथ ही पशुधन के हानि पर भी मुआवजा राशि प्रदान की जा रही है। प्रदेश में ओलावृष्टि से जिन किसानों को 50 प्रतिशत से अधिक नुकसान हुआ है। उन्हें 30 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर राहत राशि देने का निर्णय लिया गया। प्रदेश में जहां भी ओलावृष्टि से किसानों के पशुओं की मृत्यु हुई है, उन्हें गाय-भैंस की मृत्यु पर 30 हजार रुपए, बैल-भैंसा की मृत्यु पर 25 हजार रुपए, और बछड़ा-बछड़ी की मृत्यु पर 16 हजार रुपए तथा भेड़-बकरी की मृत्यु पर 3 हजार रुपए राहत राशि देने का प्रवधान किया गया है। मध्यप्रदेश में इस साल धान की खरीदी में रिकॉर्ड कायम हुआ है। खरीफमार्केटिंग सीजन में 2020-21 में 37.27 लाख मिट्रिक टन धान की खरीदी की गई थी। फिलहाल प्रदेश में धान की खरीदी जारी है। आशा है कि 2022 में धान खरीदी में नया कीर्तिमान बनेगा। प्रदेश सरकार ने विगत 15 महीने में किसानों के हित में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए वन ग्रामों के किसानों को भी राजस्व ग्रामों के किसानों के भांति ही फसल बीमा योजना का लाभ दिलाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। राजस्व ग्रामों में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का दूरस्थ और गरीब किसानों को भी मिले इसे ध्यान में रखते हुए वनग्रामों को राजस्व ग्राम में अर्थात पटवारी हल्के में शामिल किया गया है। पहले वन ग्राम राजस्व ग्राम में नहीं होने से तथा पटवारी हल्के के अन्तर्गत शामिल न होने के कारण वन अधिकार पट्टों पर प्राप्त भूमि के पट्टेधारियों को फसल हानि के मामले में फसल बीमा योजना का लाभ नहीं मिल पाता था। अब सभी किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ मिलने लगा है। विगत 15 महीनों में किसानों को उपज का उचित एवं लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए सरकार ने क्रांतिकारी कदम उठाते हुए कई सुधार किए है। चना, मसूर, सरसों का उपार्जन गेहूं के पूर्व किए जाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। गौरतलब है कि चना, मसूर और सरसों की फसल गेहूं की फसल के पहले आती है,ऐसे में किसानों को मजबूरी में कम कीमत पर बाजार में अपनी उपज बेचना न पड़े। अत: यह निर्णय किसानों के लिए बेहद लाभकारी साबित हुआ है। इसके साथ ही राज्य सरकार ने ग्रीष्मकालीन मूंग को समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने का निर्णय लिया जिसके कारण किसानों को उनकी उपज पर बेहतर मूल्य प्राप्त हुआ है। किसानों की आय को दोगुना करने आत्म-निर्भर भारत एवं आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के संकल्प को पूरा करने में इन कदमों से बड़ी मदद मिली है। प्रदेश सरकार के अथक प्रयासों से चिन्नोर धान बालाघाट को जीआई टैग मिला है। प्रदेश के अन्य फसलों जैसे शरबती गेहूं, लाल ग्राम (चना), पिपरिया तुवर, काली मूंछ चावल, जीरा शंकर चावल और इंडिजीनस फसलों को जीआई टैग दिलाने के लिए प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। विगत 15 महीने के प्रयास ही है कि मध्य प्रदेश के किसानों को कृषि उत्पाद निर्यात में सुविधा प्रदान किए जाने के लिए एपीडा का क्षेत्रीय कार्यालय मप्र राज्य कृषि विपणन बोर्ड भोपाल में प्रारंभ करवाया गया है। सरकार किसानों के हित में सभी कार्य करने के लिए कृत-संकल्पित है जिससे कि प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत और मुख्यमंत्री के आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के सपने को यथाशीघ्र साकार किया जा सके।

कृषि के क्षेत्र में मध्यप्रदेश देश में सर्वोपरि

किसानों की अथक मेहनत से आज प्रदेश कृषि विकास के क्षेत्र में सर्वोपरि है। प्रदेश को कृषि उत्पादन तथा योजना संचालन क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए सात कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त हुए हैं। प्रदेश आज दलहन-तिलहन के क्षेत्र और उत्पादन में देश में प्रथम है। सोयाबीन, उड़द के क्षेत्र एवं उत्पादन में प्रदेश, देश में प्रथम है। गेहूँ, मसूर, मक्का एवं तिल फसल के क्षेत्र एवं उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है। सम्पूर्ण खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में प्रदेश का देश में तीसरा स्थान है। मध्यप्रदेश ने देश में सबसे पहले कृषि को लाभदायी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाये थे। मुख्यत: पांच आधार बिन्दु क्रमश: कृषि लागत में कमी, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, कृषि विविधीकरण, उत्पाद का बेहतर मूल्य और कृषि क्षेत्र में आपदा प्रबंधन पर संकल्पित होकर कार्य किया गया। वर्ष 2004-05 में प्रदेश का कुल कृषि उत्पादन मात्र 2 करोड़ 38 लाख मी.टन था जो वर्ष 2020-2021 में बढ़कर 6 करोड़ 69 मी. टन हो गया है।

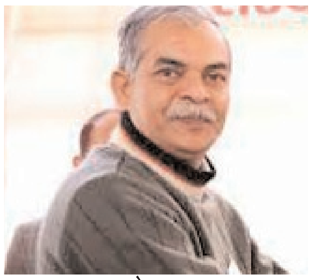

सुरेश गुप्ता
मप्र जनसंपर्क विभाग में अधिकारी

जैविक/ प्राकृतिक खेती: प्रदेश में जैविक खेती का कुल क्षेत्र लगभग 16 लाख 37 हजार हेक्टेयर है जो देश में सर्वाधिक है। जैविक उत्पाद का उत्पादन 14 लाख 2 हजार मी.टन रहा, जो क्षेत्रफल की भांति ही देश में सर्वाधिक है। जैविक खेती को प्रोत्साहन स्वरूप प्रदेश में कुल 17 लाख 31 हजार क्षेत्र हेक्टेयर जैविक प्रमाणिक है, जिसमें से 16 लाख 38 हजार एपीडा से और 93 हजार हेक्टेयर क्षेत्र, पीजीएस से पंजीकृत है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना: वर्ष 2016 से प्रारम्भ प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए प्रदेश के वार्षिक बजट में 2200 करोड़ रूपये की राशि का प्रावधान है। प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में कुल वर्षवार 4 करोड़ 43 लाख 61 हजार 570 किसान खरीफ 2016 से रबी 2021-22 तक (पांच वर्षों में) पंजीकृत हुए। वर्तमान समय तक 73 लाख 69 हजार 614 किसानों को रबी 2019-20 तक की राशि 16 हजार 750 करोड़ 87 लाख रूपये का दावा राशि का वितरण किया गया है। यह प्रीमियम से दावा राशि का 93.41 प्रतिशत है।

प्रदेश देश में बीज प्रमाणीकरण में अग्रणी: प्रदेश देश में बीज प्रमाणीकरण में अग्रणी है। बीज की गुणवत्ता के लिये क्यू.आर. कोड के प्रयोग का नवाचार किया गया है। किसानों की भागीदारी से संकर बीजों का उत्पादन कर प्रदेश को हाइब्रीड बीज उत्पादन का हब बनाया जा रहा है। प्रत्येक संभाग में एक के मान से दस उर्वरक और बीज परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है। उन्नत बीजों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए रोलिंग प्लान को अद्यतन किया गया है। तीन हजार नये बीज ग्राम विकसित किये जा रहे हैं।

90 लाख किसानों को नि:शुल्क स्वाईल हेल्थ कार्ड वितरित: जिला स्तर पर 50 मृदा परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित की गई हैं और विकासखण्ड स्तर पर 265 मृदा स्वास्थ्य परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की जा रही हैं। प्रदेश के 90 लाख किसानों को नि:शुल्क स्वाईल हेल्थ कार्ड वितरित किये जा चुके हैं।

प्रदेश कृषि अवसंरचना निधि के उपयोग में देश में अग्रणी: कृषि अधोसंरचना में सुधार के क्रम को प्रोत्साहन और वित्तीय सहायता देने की भारत सरकार की कृषि अवसंरचना निधि के उपयोग में प्रदेश, देश में अग्रणी है। इस निधि के अंतर्गत बैंकों द्वारा 1558 करोड़ रूपये से अधिक की राशि के 2129 आवेदन सत्यापित कर 1107 करोड़ रूपये के ऋण वितरित किए गये हैं।

सिंचाई सुविधा का विस्तार: पिछले डेढ़ दशक में सिंचाई का बजट 1005 करोड़ से बढ़ाकर 10 हजार 928 करोड़ रूपये किया गया है। यही वजह है कि 7.5 लाख हेक्टेयर की सिंचाई क्षमता 6 गुना बढ़कर आज की स्थिति में 43 लाख हेक्टेयर है। इस क्षमता को अगले तीन वर्ष में 65 लाख हेक्टेयर तक करने का लक्ष्य है। पिछले 2 वर्ष में 2 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता निर्मित की जा चुकी है। वर्तमान में 60 हजार करोड़ से अधिक की लागत की 361 सिंचाई योजनाएं निर्माणाधीन हैं। आने वाले तीन साल में 30 हजार करोड़ की परियोजनाओं को स्वीकृति दी जायेगी।

नर्मदा घाटी की सिंचाई योजनाएं: सरकार प्रदेश को आवंटित 18.25 एमए एफनर्मदा जल का वर्ष 2024 तक उपयोग सुनिश्चित करने की दिशा में तेजी से काम कर रही है। वर्तमान में साढ़े 12 लाख हेक्टेयर में सिंचाई सुविधा के लिए 35 हजार करोड़ रूपये की परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं।

कृषि उपभोक्ताओं को 10 घंटे बिजली: राज्य सरकार के प्रयासों से प्रदेश बिजली के क्षेत्र में आत्म-निर्भर है। प्रदेश की उपलब्ध क्षमता बढ़कर 21 हजार 451 मेगावॉट हो गयी। कृषि उपभोक्ताओं को प्रतिदिन 10 घंटे बिजली दी जा रही है।

अजा - अजजा कृषकों को 5 एच.पी. पंप पर मुफ्त बिजली: अनुसूचित जाति एवं जनजाति के एक हेक्टेयर तक भूमि वाले 5 हार्सपावर तक के स्थायी कृषि पंप उपभोक्ताओं को मुफ्त बिजली दी जा रही है। योजना में 9 लाख 41 हजार कृषक लाभान्वित हो रहे हैं। इस वित्त वर्ष में इन्हें कृषि कार्यों के लिए 5 हजार करोड़ रूपये की नि:शुल्क बिजली उपलब्ध करायी गई।

अटल किसान ज्योति योजना में 10 हार्सपावर तक के अनमीटर्ड स्थायी कृषि पंप कनेक्शनों को 750 रूपये और 10 हार्सपावर से अधिक के अनमीटर्ड स्थायी पंप कनेक्शनों को 1500 रूपये प्रति हार्सपावर प्रतिवर्ष के फ्लेट दर से बिजली प्रदाय की जा रही है। साथ ही 10 एच.पी. के मीटर युक्त स्थायी, अस्थायी पंप कनेक्शनों को भी ऊर्जा प्रभार में रियायत दी गई है। योजना से लगभग 26 लाख कृषि उपभोक्ता लाभान्वित हो रहे हैं। योजना के लिए इस वित्त वर्ष में 11 हजार 300 करोड़ रूपये की सब्सिडी का प्रावधान है।

उद्यानिकी फसलों के क्लस्टर में विस्तार: प्रदेश में उद्यानिकी के विकास की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के फलस्वरूप क्षेत्र विस्तार, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई है। उद्यानिकी फसल क्षेत्रफल वर्ष 2005 के 4 लाख 69 हजार से बढ़कर वर्ष 2020-21 में 23 लाख 43 हजार हेक्टेयर और उद्यानिकी फसलों का उत्पादन वर्ष 2005 के 42 लाख 9 हजार मी. टन से बढ़कर वर्ष 2020-21 में 340 लाख 31 हजार मी. टन तक पहुँच गया है। उद्यानिकी फसलों का क्लस्टर में विस्तार कराया जा रहा है।

खंडवा के जैविक परिवार ब्रांड ने बाजार में बनाई पहुंच

अवनीश सोमकुवर

जैविक खेती से स्वस्थ भारत बनाने का मिशन लेकर चल रहे खंडवा जिले के 500 छोटे किसानों ने पूरे देश का ध्यान आकृष्ट किया है। ये किसान 918 हेक्टेयर में जैविक उत्पाद ले रहे हैं। इनके उत्पादों का जैविक परिवार ब्रांड हर घर पहुंच रहा है। सतपुड़ा जैविक प्रोडयूसर कंपनी से जुड़े किसान चाहते हैं कि देश के नागरिकों को शुद्ध अनाज, फल-सब्जी मिले। वे दवाओं से दूर रहे और हमारी धरती विषमुक्त रहे। कंपनी से जुड़े झिरन्या तहसील के बोदरानिया गांव के दारा सिंह धार्वे मख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की सोच से पूरी तरह सहमत हैं कि जैविक खेती धरती और मनुष्य को बचाने का सबसे ठोस उपाय है। दारा सिंह धार्वे को जैविक गेहूं के अच्छे दाम मिल रहे हैं। इस साल 2500 रुपए प्रति क्विंटल तक मिल जाएंगे। वे कहते हैं कि जैविक खेती से अब ज्यादा से ज्यादा किसान जुड़ना चाहते हैं। रासायनिक खाद से खेती की लागत भी बढ़ जाती है और स्वास्थ्य को भी नुकसान होता है। कंपनी के सीईओ विशाल शुक्ला बताते हैं कि कंपनी को बने तीसरा साल चल रहा है। इतने कम समय में कंपनी के जैविक उत्पादों ने मार्केट में अच्छी पहचान बना ली है। जैविक परिवार ब्रांड के कारण खेत और उपभोक्ता के बीच मजबूत संबंध बन गया है। वे बताते हैं कि अगले तीन सालों में 65 शहरों में सवा 3 लाख जैविक उत्पादों के उपभोक्ता जुड़ जाएंगे। जोमेटो, स्वीगी, निंबस, ई-कार्ट, मीशो, गाट इट जैसे डिलीवरी पार्टनर्स हमसे जुड़ गए हैं और इंदौर में काम भी शुरू कर दिया गया है। इस प्रकार आधुनिक मार्केटिंग और टेक्नालाजी की मदद से जैविक उत्पादों की पहुंच बढ़ाने की कोशिशें जारी है। जैविक परिवार को वितरक मिल रहे हैं। इसलिए ग्राहक सेवा विभाग हमने खोला है और उनके संपर्क में सेल्स टीम रहती है। शुक्ला कहते हैं कि किसान उत्पाद संगठनों को एक साथ लाकर खेती के क्षेत्र में आर्थिक उद्यमिता की शुरुआत करने का जो सपना मुख्यमंत्री ने देखा है उसे साकार करने में हम हमेशा आगे रहेंगे। सतपुड़ा जैविक प्रोड्यूसर कंपनी अस्तित्व में आने के संबंध में शुक्ला बताते हैं कि शुरुआत दस किसानों से हुई। शुरुआत में गेहूं, सोयाबीन और प्याज के लिए आपस में समूह बनाए। इन समूहों से मिलकर समितियां बनीं और इस तरह धीरे-धीरे किसान जुड़ते गए और यह सिलसिला जारी है। इसी बीच कोरोना काल आ गया लेकिन किसानों को परेशानी नहीं हुई।

गेहूं की खरीदी जारी रही। उनका जैविक उत्पाद सब्जी सीधे ग्राहकों के घर पहुंचने लगा। कंपनी से जुड़ने का कारण बताते हुए सिंगोट गांव के किसान राजेश टिरोले कहते हैं कि एक साथ मिलकर एक ब्रांड के नाम से उत्पाद मार्केट में आने से दाम बढ़ते हैं और सभी किसानों को फायदा होता है। राजेश दो हेक्टेयर के छोटे किसान हैं। वे गेहूं और सब्जियां लगाते हैं। शुद्ध रूप से जैविक खाद का उपयोग करते हैं। वे बताते हैं कि कंपनी में जुड़ने से जैविक सब्जियों के अच्छे दाम मिलने लगे हैं। पहले बहुत कम दाम में सब्जियां बिकती थी। अब जैविक परिवार ब्रांड के माध्यम से अच्छे दाम घर बैठे मिल रहे हैं। पुनासा तहसील के राजपुरागांव में मनोज पांडे तीन एकड़ में जैविक पद्धति से गेहूं और सब्जियां उगा रहे हैं। वे बताते हैं कि जैविक उत्पादों का बाजार अब बढ़ रहा है। हमारा जैविक गेहूं भी अच्छे दाम पर बिक रहा है। जैविक सब्जियां भी पसंद की जा रही हैं। अकेले खेती करने में और कंपनी के साथ मिलकर खेती करने में मुनाफा होने के साथ ही मार्केट तक भी सीधी पहुंच बढ़ गई है। उनके अनुसार यह कंपनी एक ऐसा प्लेटफार्म है जो एक मिशन के साथ जैविक उत्पादों को आगे बढ़ा रहा है। उपभोक्ताओं और उत्पादक किसानों के बीच सेतु का काम कर रहा है।

प्रति हेक्टेयर 27 क्विंटल सोयाबीन का उत्पादन प्राप्त हुआ

तकनीकी खेती से किसान ने खोल दिए समृद्धि के द्वार

वंदना बृजेश परमार। देवास

जिले के ग्राम पोलायजागीर गांव के किसान लक्ष्मीनारायण ने उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर अपने परिवार के जीवन-स्तर को कई गुना बढ़ाने में कामयाबी हासिल की है। परम्परागत तरीके से खेती करने वाले लघु सीमांत किसान लक्ष्मीनारायण के पास 1.79 हेक्टेयर भूमि होने के बावजूद वह बमुश्किल घर का खर्च चला पाते थे। पर वर्ष 2015 में ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र देवास, केन्द्रीय गेहूं अनुसंधान केन्द्र इंदौर, कृषि विवि जबलपुर और ग्वालियर, केन्द्रीय सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र इंदौर से सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने उच्च वैज्ञानिक तकनीकी से खेती आरंभ की। परिणाम स्वरूप आज खेती से वह सात लाख वार्षिक आय अर्जित कर रहे हैं। इस साल 16 लाख लागत से मकान भी बनकर तैयार हो गया है और बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं, जिनकी सालाना फीस एक-एक लाख है।

लक्ष्मीनारायण कहते हैं सारे मार्गदर्शन के बाद मैंने वर्ष 2017-18 में रिजबेड पद्धति से खरीफ फसल में सोयाबीन और रबी में चना बोया। उन्हें प्रति हेक्टेयर 27 क्विंटल सोयाबीन और लगभग 38 क्विंटल चना उत्पादन प्राप्त हुआ। वर्ष2018-19 में इसी पद्धति को अपना कर ड्रिप और स्प्रिंकलर इरिगेशन पद्धति का प्रयोग करते हुए उच्च गुणवत्ता का 40 किलोग्राम प्रति एकड़ गेहूं बोया। स्वयं द्वारा तैयार जैविक खाद, जैविक कीटनाशक जैसे गौमूत्र, अमृतपानी छाछ, निम्बोली, नीम, तम्बाखू, बेशरम के पत्तों के अर्क का प्रयोग किया। पूर्ण अवस्था होने पर गेहूं की फसल पर बोरान, जिंक चिलेट और आयरन चिलेट के प्रयोग के फलस्वरूप प्रति हेक्टेयर 109 क्विंटल गेहूं का उत्पादन प्राप्त हुआ। उन्होंने इसी तरह वैज्ञानिक पद्धति अपनाते हुए वर्ष 2019-20 में चना और गेहूं का प्रचुर उत्पादन लिया।

खेत में ही सड़ा रहे नरवई

लक्ष्मीनारायण ने वर्तमान वर्ष में गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों की उच्चतम तकनीकों को अपनाते हुए सोयाबीन, गेहूं और चने की फसल लगाई है। उन्होंने पंचायत विभाग की मदद से अपने खेत में तलाई का भी निर्माण करवाया है, जिसमें वह मछली-पालन शुरू करने जा रहे हैं। वैज्ञानिक ढंग से खेती ने जहां फसल उत्पादन लागत कम कर दी है, वहीं खाद और दवाइयों के लिये भी वह अब बाजार पर निर्भर नहीं है। वह नरवाई को न जलाते हुए खेत में ही सड़ा देते हैं। इससे मिट्टी का बायोमॉस बढ़ने के साथ रासायनिक और भौतिक गुणों में सुधार होता है। वह विभिन्न फसलों की नई वेरायटी के आधार बीज भी तैयार कर रहे हैं, जो बीज उत्पादक कम्पनियां और किसान उनके घर से ही खरीद लेते हैं।

किसान ने खेती को बनाया लाभ का धंधा

छिंदवाड़ा में पथरीली जमीन को बना दिया उपजाऊ

दयानंद चौरसिया। छिंदवाड़ा

जिले के मोहखेड़ विकासखंड के ग्राम बीसापुर खुर्द के किसान कमल पाठे अपनी पथरीली जमीन में सुधार करके आधुनिक तकनीकी से खेती कर रहे हैं और उन्होंने खेती को लाभ का धंधा बना लिया है। अपनी जमीन पर नवीन तकनीकी से कई तरह की फसलें लेते हुए लाखों रुपए कमा रहे हैं। इस वर्ष उन्हें खेती से लगभग 50 लाख रुपए की शुद्ध आय प्राप्त होने की संभावना है। खेती के समन्वित कृषि माडल से खेती कर उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है और अन्य कृषकों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया है। किसान पाठे को आत्मा परियोजना के अंतर्गत सर्वोत्तम कृषक का इनाम प्राप्त हुआ है और कृषि विज्ञान केंद्र छिंदवाड़ा द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

आधुनिक तकनीक का उपयोग

किसान के पास 10 हेक्टेयर भूमि है। उन्होंने अपनी पथरीली भूमि में सुधार कर बेड बनाकर आधुनिक तकनीकी का उपयोग करते हुए मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई से शिमला मिर्च, टमाटर, अरहर, गेहूं, चना, अदरक, मक्का, सरसों, मिर्च, धनिया, पालक आदि कई प्रकार की फसलों का विपुल उत्पादन ले रहे हैं और खेती में नवाचार कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ा चुके हैं।

लाखों की सब्जी बेची

किसान ने इस वर्ष आठ एकड़ में शिमला मिर्च, 6 एकड़ में टमाटर, 3 एकड़ में अदरक, 3 एकड़ में गेहूं, 2 एकड़ में चना और शेष भूमि में अन्य फसलें लगाई है, जिसमें से शिमला मिर्च से लगभग 17 लाख रुपए, टमाटर से लगभग 22 लाख और अन्य फसलों से लगभग 11 लाख की आय संभावित है। उनके समन्वित कृषि माडल से हर मौसम में फसल से आय संभव है, इसलिए उनकी खेती को देखकर क्षेत्र के कई किसान प्रेरित होकर उनका माडल अपना रहे हैं।

कैसे होगी प्याज की अच्छी खेती कृषि वैज्ञानिकों ने दिए टिप्स

भोपाल। संवाददाता

प्याज की रोपाई करने का सही वक्त आ गया है। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को प्याज की खेती के लिए कुछ टिप्स दिए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार रोपाई वाले पौधे छह सप्ताह से ज्यादा के नहीं होने चाहिए। पौधों को छोटी क्यारियों में रोपाई करें। रोपाई से 10-15 दिन पहले प्रति एकड़ खेत में 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद डालें। इसी तरह 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60-70 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा 80-100 किलोग्राम पोटाश आखिरी जुताई में डालें। पौधों की रोपाई अधिक गहराई में न करें तथा कतार से कतार की दूरी 15 सेंमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंमी रखें। इससे किसानों को लाभ होगा। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मौसम को देखते हुए दूसरी फसलों के लिए भी एडवाइजरी जारी की है। कृषि भौतिकी संभाग के कृषि वैज्ञानिकों ने कहा है कि कोरोना के गंभीर फैलाव को देखते हुए किसानों को सलाह है कि तैयार सब्जियों की तुड़ाई तथा अन्य कृषि कार्यों के दौरान मास्क का उपयोग करें और उचित दूरी बनाए रखें। बीते दिनों की बारिश की संभावना को देखते हुए अगले कुछ दिनों के लिए सभी खड़ी फसलों में सिंचाई तथा किसी भी प्रकार का छिड़काव न करें।

सरसों की फसल में चेपा

मौसम को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह है कि सरसों की फसल में चेपा कीट की निरंतर निगरानी करते रहें। प्रारंभिक अवस्था में प्रभावित भाग को काट कर नष्ट कर दें। ताकि उसका संक्रमण पूरी फसल में न फैले। चने की फसल में फली छेदक कीट की निगरानी करते रहें। इसी तरह कद्दूवर्गीय सब्जियों के अगेती फसल की पौध तैयार करने के लिए बीजों को छोटी पालीथीन के थैलों में भर कर पाली घरों में रखें।

जैविक खेती से लाखों कमा रहे जयराम

सतीश साहू। बैतूल

जिले के ग्राम बघोली के किसान जयराम गायकवाड़ अपनी 30 एकड़ में से सिर्फ 10 एकड़ जमीन का उपयोग जैविक खेती कर सालाना 35 लाख कमा रहे हैं। जयराम पांच एकड़ में गन्ने की खेती, दो एकड़ में वर्मी कम्पोस्ट यूनिट, गौशाला और गोबर गैस संयंत्र, डेढ़ एकड़ में जैविक गेहूं और शेष डेढ़ एकड़ में जैविक सब्जियां उगा रहे हैं। गौशाला में उनके पास 55 गौवंश हैं, जिनसे उन्हें रोज लगभग डेढ़ सौ लीटर दूध मिलता है। जयराम बताते हैं कि वह मप्र राज्य जैविक प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल से पंजीकृत होने के बाद पिछले 15 सालों से जैविक खेती कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि गन्ने से वह जैविक गुड़ का निर्माण करते हैं, जो बाजार में 60 रुपए प्रति किलो के अच्छे दाम पर बिक जाता है। सुबह का दूध वह बाजार में बेच देते हैं और शाम के दूध से वह मावा, पनीर, दही एवं मठा तैयार कर बेचते हैं। इससे उन्हें काफी अच्छी आमदनी हो जाती है। किसानों की आय को दोगुना करने का यह एक बेहतरीन विकल्प है। जिससे ना सिर्फ किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। बल्कि इससे किसानों को आगे बढ़ने की हिम्मत भी मिलेगी।

अन्य किसान ले रहे मार्गदर्शन

वे बताते हैं कि जैविक खाद के रूप में वे वर्मी कम्पोस्ट भी बनाते हैं, जिसकी बिक्री से भी उन्हें अच्छी आमदनी होने के साथ जैविक खेती को बढ़ावा मिल रहा है। वह जरूरत होने पर किसान-कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के अधिकारियों से बातचीत कर कृषि क्षेत्र में आई नई तकनीकी से स्वयं के काम और जानकारी को अद्यतन भी करते रहते हैं। अब आसपास के गांव के किसान भी जयराम से मार्गदर्शन लेने आने लगे हैं।

रंग लाई 8वीं पास किसान की मेहनत, नरवाई से खेत में ही फसल के बीच ही बना रहे जैविक खाद

खरगोन में सेवफल की खेती, विदेश से मिल रही सराहना

संजय शर्मा । खरगोन

जिले के एक किसान, जो लगभग 45 वर्षों से खेती किसानी में जुटे हैं। इन्होंने उस समय खेती किसानी की शुरुआत की थी जब एच-4 कॉटन किस्म (कपास) पहली-पहली बार निमाड़ में आई थी और इनके ही खेत में डेमो लगाया गया था। तब से लेकर आज तक खरगोन में कसरावद के 8वीं पास 65 वर्षीय सुरेंद्र पाचोटिया ने अपनी खेती में अनेकों प्रयोग किए हैं। तीन वर्ष पूर्व ऐसा ही एक प्रयोग निमाड़ में एप्पल की खेती का शुरू किया था। जो आज पूरी संभावनाओं के साथ सामने आ रहा है। उनके खेत में लगाए गए 40 सेवफल के पौधों से 1 साल पहले ही फल पक चुके हैं।

अपने सफल प्रयोग से उत्साहित होकर सुरेंद्र पाचोटिया ने सेवफल के 200 नए पौधे लगाकर खेती प्रारंभ कर दी है। मूल रूप से गन्ने की खेती कर रहे सुरेंद्र अब इसके साथ अमरूद, गन्ने की विभिन्न किस्मों और सब्जियों की नर्सरी तैयार करने में समय खपाते हैं।

दक्षिण अमेरिका पहुंचा निमाड़ का सेवफल

आज से लगभग एक साल पहले अपने सेवफल के पौधों से सुर्खलाल रंग के फल आये तो सुरेंद्र उत्साहित होकर अपनी फेसबुक पोस्ट कर दिया। उनकी पोस्ट को दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के सूरीनाम देश में रहने वाले भारतीय मूल के नागरिक ने पसंद करने के बाद उनकी सराहना की। तब से सुरेंद्र ने ठान लिया कि किसी न किसी दिन निमाड़ का अपना एप्पल भी होगा। जिसकी खेती भी होगी और बाजार में भी पसंद किया जाएगा।

नरवाई जलाते नहीं

मूल रूप से गन्ने की खेती करने वाले किसान सुरेंद्र ने छह एकड़ में गन्ने की खेती करते हैं। गन्ने में बड़ी संख्या में नरवाई निकलती है। जिसे किसान आग लगाकर राख बना देते हैं। लेकिन सुरेंद्र का जरा हटकर फंडा अपनाया है। वे गन्ने के ठूठ बच जाते है और अगर गन्ने की दूसरी फसल लेना है तो गन्ना कटने के बाद बेड (गन्ने की बेड) के दोनों ओर कल्टीवेटर से जड़े खोल लेते हैं। इससे मिट्टी ऊपर हो जाती है और दूसरी ओर मिट्टी नरवाई पर चढ़ जाती है। फिर दो से तीन पानी और रोटावेटर चला देते है। गन्ना पकने से पहले जैविक खाद खेत में ही तैयार हो जाती है।

मछुआ परिचय पत्र बनाने के लिए आवेदन आमंत्रित

खरगोन। संचालनालय मत्स्योद्योग मप्र भोपाल द्वारा नदियों एवं अन्य प्राकृतिक जल स्त्रोतों में मत्स्याखेट एवं मत्स्य बाजारों में विक्रय करने वाले असंगठित क्षेत्र के मछुआरों के लिए मछुआ परिचय पत्र बनाने के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित हैं। मत्स्योद्योग के सहायक संचालक डीएस सोलंकी ने बताया कि योजना में मछुआ परिचय पत्र बनने के पश्चात शासन द्वारा परिचय पत्रधारक मछुओ के लिए अल्पकालीन ऋण प्रदाय किए जाने के लिए योजना प्रक्रियाधीन है। जिले में मत्स्यपालन, मत्स्य परिवहन, विक्रय इत्यादि गतिविधियों में संलग्न मछुआ किसानों को इस योजना से लाभान्वित किया जाएगा। आवेदन के साथ आधार कार्ड, बैंक पासबुक की छायाप्रति, एक फोटो के साथ कार्यालय सहायक संचालक मत्स्योद्योग पुराना कलेक्टर परिसर में कार्यालयीन समय में जमा कर सकते हैं।

गौ-वंश के चारा-भूसा के लिए 33.70 करोड़ रुपए जारी

भोपाल। गौ-वंश के चारा-भूसा के लिए 33.70 करोड़ रुपए जारी किए गए हैं। अध्यक्ष मध्यप्रदेश गौ-पालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि ने बताया कि प्रदेश में मुख्यमंत्री गौ-सेवा योजना में 1621 गौ-शालाओं के लिये 33 करोड़ 70 लाख रुपए की राशि जारी कर दी गई है। योजना में प्रदेश के 52 जिलों में 1621 गौ-शालाओं में 2 लाख 76 हजार 765 गौ-वंश हैं। प्रति गौ-वंश 20 रुपए प्रति दिवस के मान से चारा-भूसा क्रय के लिए यह राशि दी गई है। अपर मुख्य सचिव पशुपालन जेएन कंसोटिया ने बताया कि मुख्यमंत्री गौ-सेवा योजना की गौ-शालाओं में से 530 गौ-शालाएं महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा संचालित की जा रही हैं। ये समूह गौ-काष्ठ , जैविक खाद, गौ-शिल्प और अन्य रोजगार उन्मूलक गतिविधियों से आय प्राप्त कर रहे हैं। गौ-शालाओं के गौ-वंश का टीकाकरण और अन्य चिकित्सीय सुविधाओं के निर्देश विभागीय अमले को दिए गए हैं।

उत्कृष्ट कार्य करने वाली सहकारी संस्थाओं को नवाजा

भोपाल। सहकारिता एवं लोक सेवा प्रबंधन मंत्री डॉ. अरविंद सिंह भदौरिया ने कहा कि सहकारी संस्थाओं द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य अन्य संस्थाओं के लिए कार्य करने की प्रेरणा बनेंगे। मंत्री ने मंत्रालय में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम और सहकारिता विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राज्य में उत्कृष्ट कार्य करने वाली सहकारी समितियों को क्षेत्रीय उत्कृष्टता एवं मेरिट पुरस्कार-2021 प्रदान किए। अपर मुख्य सचिव अजीत केसरी ने पुरस्कृत संस्थाओं के कायोरं को सफलता की कहानी के तौर पर प्रचारित करने के लिए कहा, ताकि दूसरी संस्थाएं भी इनका अनुकरण कर सकें। विभिन्न क्षेत्रों में सहकारी विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिये इन क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली सहकारी संस्थाओं को पुरस्कृत किया गया। सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति (पैक्स) का प्रथम पुरस्कार आदिम-जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित गोगावां, जिला खरगोन और द्वितीय पुरस्कार सेवा सहकारी समिति मयाज़दित जामसावली, जिला छिंदवाड़ा को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक समिति (क्रेडिट) में प्रथम पुरस्कार सद्गुरु साख सहकारी संस्था मर्यादित, जिला धार को और द्वितीय पुरस्कार गुजराती रामी माली समाज नवयुवक साख सहकारी संस्था मयाज़दित नौगांव, जिला धार को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक समिति (प्र-संस्करण) के क्षेत्र में प्राथमिक वनोपज सहकारी समिति मर्यादित, रेहटी, जिला सीहोर को और सर्वश्रेष्ठ महिला सहकारी समिति (महिला) में इंदौर जिले की स्वश्रयी महिला साख सहकारी संस्था मर्यादित को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

यह रहे मौजूद

सहकारिता आयुक्त संजय गुप्ता, अपर आयुक्त सहकारिता अरुण माथुर, क्षेत्रीय निदेशक राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम आर.के. मंगला, एमडी अपेक्स बैंक पीएस तिवारी, एमडी आवास संघ अरविंद सिंह सेंगर और एमडी बीज संघ अमरीश सिंह भी उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केंद्र खरगोन में मसाला बोर्ड के अधिकारियों ने किसानों के साथ की कार्यशाला

किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए मांगे सुझाव

संजय शर्मा । खरगोन

खरगोन। कृषि विज्ञान केन्द्र खरगोन में किसानों के साथ मसाला बोर्ड के अधिकारियों ने कार्यशाला की। जिले में दो दिवसीय भ्रमण पर आए मसाला बोर्ड के अधिकारियों ने विभागीय अमले के साथ जिले में मिर्च उत्पादन, टेस्ट, किसानों की स्थिति, वर्तमान लागत संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। कार्यशाला के दौरान जिले के सभी विकासखंडों से बुलाए गए मिर्च उत्पादक किसानों ने अधिकारियों के सामने उनके द्वारा मिर्च की खेती करने के तौर तरीकों के बारे में बताया। अधिकतर किसानों द्वारा मिर्च की खेती में अधिक लागत होने के कारण उससे आने वाली समस्याओं के बारे में सुझाव भी मांगे। मसाला बोर्ड के अधिकारियों ने विशेष रूप से निमाड़ की मिर्च के विदेशों में निर्यात करने के महत्वपूर्ण पहलूओं के बारे में जानकारियां दी। उन्होंने कहा कि विदेशों में निर्यात करने के लिए मिर्च के महत्वपूर्ण 6 पैरामीटर में सफल होने के

आधी लागत में ही अच्छा उत्पादन

मिर्च बोर्ड के अधिकारी भरत अर्जुन ने किसानों की समस्याओं को सुनने के बाद कहा कि जहां मिर्च की फसल में 1 लाख की लागत से पेस्टिसाइड का उपयोग कर रहे है वहां मात्र 50 हजार रुपए के पेस्टिसाइड का उपयोग कर अच्छा मुनाफा ले सकते हैं। इसके लिए किसानों को मिर्च की फसल में लगने वाली बीमारी, कीड़ों आदि को समझना होगा। इसके अलावा छिड़काव में उपयोग की जाने वाली कीटनाशक के प्रयोग करने के तरीके तथा उनका प्रभाव भी जानना होगा।

रखना होगा संयम

उन्होंने बताया की किसानों को एक ही कीटनाशक बार-बार उपयोग करने से बचना होगा। वहीं कभी भी मिर्च तुड़ाई से पहले कीटनाशक का छिड़काव नहीं करना चाहिए। मसाला बोर्ड के सर्वधन अधिकारी आशीष जायसवाल ने कहा कि किसानों को संयम रखना होगा। व्यापारियों की भांति सोच रखने पर ही अधिक मुनाफा मिल सकता है। आज की बाजार पद्धति थोड़ी अलग हैं उन बिंदुओं को भी ध्यान में रखते हुए खेती करनी होगी।

आत्मनिर्भरः नौकरी छोड़ शुरू किया था कारोबार, प्रतिवर्ष कमा रहे 14 लाख

विंध्य के अरुण की जिंदगी में शहद ने भरी मिठास

रीवा। संवाददाता

नौकरी की सीमित आय को छोड़ कर खुद का व्यवसाय करने वाले अरुण प्रतिवर्ष 14 लाख रुपए कमा रहे हैं। यह आमदनी अरुण को शहद के व्यवसाय से हो रही है। यह कहानी है जिले के बैकुंठपुर के पिपरी गांव के निवासी अरूण द्विवेदी की। राह में कई परेशानी आई। लोगों ने खुद के शहद के व्यवसाय को गलत बताते हुए कई नकरात्मक बातें भी कही। लेकिन अरुण ने सबकी बातों को नजरअंदाज करते हुए अपने दिल की सुनी। आज स्थिति यह है कि जो लोग अरुण को गलत बताते थे वह आज खुद ही उनसे सलाह लेने आते हैं।

अरुण ने बताया कि यूपी के जौनपुर में वह एक निजी कंपनी में काम करते थे। 14 वर्ष तक उन्होंने प्राइवेट जॉब की। लेकिन नौकरी से इतने पैसे नहीं मिल पाते थे कि वह अपना और अपने परिवार का सही तरीके से भरण-पोषण कर सके। लेकिन 2017 में उनके जीवन में एक टर्निंग प्वाइंट आया और उन्होने अपना खुद का व्यवसाय करने की सोची, और उनकी जिले में अब शहद व्यवसायी के रूप में अलग पहचान है।

मधुमक्खी पालन का लिया प्रशिक्षण

बताया गया है कि 2017 में रीवा आने के बाद वह कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा के संपर्क में आए। यहां उन्होने मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होने मधुमक्खी पालन की तरफअपना कदम बढ़ाना शुरू कर दिया।

आज हैं 165 बाक्स

अरुण ने बताया कि उसने 2017 में केवल 30 बॉक्स से मधुमक्खी पालन की शुरुआत की थी। वर्तमान समय के हालात यह है कि वह 165 बॉक्स में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। अरुण की योजना आगामी वर्षों में बॉक्स की संख्या बढ़ाकर उसे 250 तक करने के लिए है। शहद बनाने के लिए सबसे जरूरी होता है परागण। परागण के लिए अरुण मधुमक्खियों के बॉक्स को यूपी के फतेहपुर, दमोह सहित अन्य स्थानों में ले जाते हैं।

प्रदेश में अब तक 41 हजार से अधिक कार्ड बनाए गए

पशुपालक केसीसी लिंकेज अभियान में प्रदेश अव्वल

भोपाल। संवाददाता

मध्यप्रदेश में इस अभियान के तहत पात्र पशुपालक, दुग्ध उत्पादक संगठन को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराते हुये पशुपालन की गतिविधि से जोड़ा जा रहा है। वह कृषक जो कि पूर्व से केसीसी धारक है उनके केसीसी को भी इस अभियान अंतर्गत पशुपालन गतिविधि से जोड़ने की कार्रवाई की जाएगी। डॉ. मेहिया के अनुसार पशुपालक के केसीसी लिंकेज होने पर पशुचारा, दाना, बाटा क्रय करने के लिए बैंक शाखा के द्वारा प्रति 15000 रुपए एवं प्रति भैंस 18000 रुपए राशि 3 माह के लिए प्रदाय की जाएगी। पशुपालक 3 माह में जमा करके पुनः राशि आवश्यकता अनुसार प्राप्त कर सकता है। डॉ. मेहिया ने बताया कि अभियान के आवेदन पत्र तैयार करने के लिए कृषक, पशुपालक निकट के पशु चिकित्सा संस्था प्रभारी से संपर्क करके आवेदन पत्र तैयार करवाएं। आवेदन पत्र के साथ कृषक को जमीन की खसरा नकल, राशन कार्ड, पेन कार्ड, आधार कार्ड एवं बैंक के केसीसी का खाता क्रमांक उपलब्ध कराना होगा।

गाय, भैंसों में अब बछिया-पड़िया ही पैदा होंगी

संचालक पशुपालन ने बताया कि प्रदेश गाय-भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान अब सेक्स सोर्टेड सीमन द्वारा गर्भित किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप 90 प्रतिशत बछिया-पड़िया ही पैदा होंगी। सेक्स सोर्टेड सीमन का शुल्क सामान्य वर्ग के लिए 450 रुपए तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए 400 रुपए रहेगा। संचालक डॉ. मेहिया के अनुसार गाय में जर्सी, गिर, साहीवाल एवं भैंस में मुर्रा नस्ल का सीमन सभी विकासखंड मुख्यालयों में पशु चिकित्सालयों में उपलब्ध है। पशु पालक जो पशु चिकित्सालय एवं पशु औषधालय से 3 किमी की दूरी पर निवास करते हैं वे कॉल करके घर पहुंच सेवा (150 रुपए शुल्क) का लाभ ले सकते हैं।

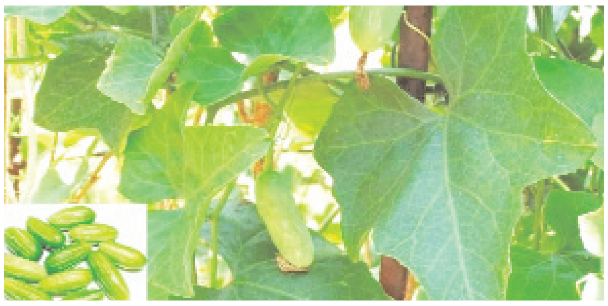

लघु सब्जी कुंदरू की उन्नत काश्त तकनीक

मंडला। संवाददाता

कुंदरू एक लोकप्रिय, बहुवर्षीय, शीतोष्ण सब्जी है। जिसका वानस्पितिक नाम काक्सीनिया इंडिका कार्डिफोलिया तथा कुल कुकुरबिटेसी है। प्राचीनकाल से हमारे देश में कुंदरू की खेती की जाती है। इसकी उत्पत्ति स्थान भारत है। भारत में कुदरू का उत्पादन तमिलनाडू, कर्नाटका, केरल आंध्रप्रदेश, गुजरात, तेलांगना तथा पश्चिम बंगाल में प्रमुखता से किया जाता है। कुंदरू को अलग-अलग स्थानों पर अलग नाम से जाना जाता है जैसे टिंडारा, रोंडी, को व्यक्का, डों डाकया, ते लाकुचा, तेंदली आदि। कुंदरू का फल स्वाद मे ककड़ी के समान होता है। कुंदरू और ककड़ी के बीच अंतर उनका आकार का होता है। कुंदरू का फल सिर्फ 2-3 इंच लंबा, खीरे से छोटा होता है। वर्तमान समय मे यह काफी लोकप्रिय है तथा दक्षिण भारतीय व्यंजन सांभर में इसका उपयोग किया जाता है। इसके आलावा इसकी सब्जी भी काफी रुचिकर होती है। कुंदरू फल में मुख्य रूप से कैल्शियम, विटामिन ए तथा सी प्रचुर मात्रा में भी पाया जाता है। कुंदरू का प्राचीन काल से ही आयुर्वेद मे उपयोग किया जाता है। कुंदरू का पूरा पौधा औषधीय के रूप में उपयोग किया जाता है। कुंदरू कब्जकारक, पित्त रोगों में लाभकारी, मधुमेह रोग मे शक्कर के स्तर को कम करने वाला, ज्वरनाशक फल होता है। पत्ते, फल और जड़ें मधुमेह रोग में उपयोगी होता है। पौधे की पत्तियों का उपयोग दाद, खाज, साइनस, यूटीआई और सांस की बीमारियो के इलाज में किया जाता है।

-एक जिला-एक उत्पाद योजना की कार्यशाला में वन विभाग के पीएस ने कहा

रीवा में दस हजार एकड़ तक क्षेत्र में हो सकती है बांस की खेती

-आगामी 20 वर्षों तक बांस की बहुत अधिक मांग रहेगी, लकड़ी के स्थान पर अब बांस के उपयोग को प्राथमिकता

रीवा। जिले में बांस रोपण की अपार संभावनाएं हैं। एक जिला एक उत्पाद योजना में शामिल बांस उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला वन विभाग के सभागार जयंती कुंज में आयोजित की गई। कार्यशाला में किसानों से चर्चा करते हुए प्रमुख सचिव वन अशोक वर्णवाल ने कहा कि रीवा जिले में 5 से 10 हजार एकड़ में बांस की खेती की जा सकती है। बांस की खेती परंपरागत खेती की तुलना में कम लागत तथा कम रिस्क पर अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय है। अच्छी किस्म का बांस रोपित करने के बाद 5वें वर्ष से लगभग 40 वर्षों तक लगातार लाभ मिलता रहता है। एक बार बांस रोपित करने तथा दो वर्षों तक देखभाल के अलावा इसमें किसी तरह का खर्च नहीं आता है। आगामी 20 वर्षों तक बांस की बहुत अधिक मांग रहेगी। लकड़ी के स्थान पर अब बांस के उपयोग को प्राथमिकता दी जा रही है।

किसान बांस की खेती को अपनाएं- प्रमुख सचिव ने कहा कि परंपरागत खेती में आने वाले खर्चे का हिसाब-किताब लगाने के बाद किसान बांस की खेती को अपनाएं। जब बड़े क्षेत्र में बांस का रोपण होगा तभी अधिक लाभ मिलेगा। निजी कंपनी वाले दो रुपए 55 पैसे प्रति किलो की दर से बांस खरीदने का एग्रीमेंट कर रहे हैं। बांस की खेती में मौसम का असर नहीं पड़ता है। बांस पीपल के बाद सर्वाधिक ऑक्सीजन देने वाला पौधा है। इमारती लकड़ी के वृक्ष 25 से 30 साल में तैयार होते हैं। जबकि बांस 5 से 7 साल में तैयार हो जाता है एवं लगातार उत्पादन देता रहता है।

किसनों को होगा मुनाफा

प्रधान वन संरक्षक रमेश गुप्ता ने कहा कि बांस की खेती नहीं, बल्कि व्यावसायिक उत्पादन किया जाना चाहिए। इसे व्यवसाय के रूप में अपनाकर किसान अच्छा लाभ कमा सकते हैं। जो किसान बांस की सफलतापूर्वक खेती कर रहे हैं उनके यहां अन्य किसानों का भ्रमण कराकर बांस की खेती के अच्छे अनुभव लिए जा सकते हैं।

तकनीकी मार्गदर्शन दिया जाएगा

कलेक्टर मनोज पुष्प ने कहा कि रीवा जिला मुंबई-बनारस औद्योगिक कॉरिडोर का भाग है। यहां अन्य उद्योगों के साथ बांस उद्योग की प्रबल संभावना है। किसान बांस की खेती को अपनाकर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। बांस की खेती के लिए वन विभाग से पौधे तथा तकनीकी मार्गदर्शन दिया जाएगा। किसानों को बांस की बिक्री के लिए भी हर संभव सहायता दी जाएगी। एक जिला एक उत्पाद योजना में शामिल बांस रोपण को अपनाकर जिले में आर्थिक विकास का नया अध्याय लिखा जा सकता है।

बांस में नहीं लगते कीट

कार्यशाला में बांस मिशन के संचालक उत्तम कुमार सुबुद्धे ने बांस की विभिन्न प्रजातियों की जानकारी दी। वहीं मुख्य वन संरक्षक एके सिंह ने कहा कि जिले के बड़े किसान बांस की खेती को अपनाकर जिले को नई ऊंचाई दे सकते हैं। बांस को किसी तरह की कीट-व्याधि तथा जानवरों से भी हानि नहीं होती है। बांस उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कार्यशाला मील का पत्थर साबित होगी।

कृषि मंत्री कमल पटेल ने आदिवासी विकासखंड साल्याखेड़ी में देखा प्रदर्शन और की सराहना

प्रदेश में पहली बार हरदा में गेहूं की फसल पर ड्रोन से यूरिया का छिड़काव

» ड्रोन से कीटनाशक व उर्वरक के छिड़काव से समय और धन की बचत होगी

» मात्र 10 मिनिट में 1 एकड़ में नैनो यूरिया या कीटनाशक का छिड़काव किया

संवाददाता, हरदा।

भाजपा के पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर हरदा जिले के अमर शहीद इलाप सिंह के गृह ग्राम साल्याखेड़ी में ड्रोन से गेहूं की फसल पर यूरिया के छिड़काव किया गया।
प्रदेश के कृषि मंत्री कमल पटेल ने जिले के आदिवासी बहुल विकासखण्ड साल्याखेड़ी में नैनो यूरिया के छिड़काव का प्रदर्शन देखा। हरदा प्रदेश का ऐसा पहला जिला है जहां से इसकी शुरुआत की गई है। इस दौरान कृषि उप संचालक एमपीएस चंद्रावत,सहायक संचालक संजय यादव,सहायक तकनीकी प्रबंधक अनिल मलगाया सहित कृषि अधिकारी मौजूद रहे। मंत्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देश के किसानों को खेती की लागत के मुकाबले आय दुगुनी ओर आधुनिक खेती करने के सपने को मप्र में अमल में लाना शुरू कर दिया। ड्रोन से कीटनाशक व उर्वरक के छिड़काव से किसानों के समय व धन की बचत होगी।

10 मिनट में एक एकड़ में छिड़काव

कृषि मंत्री ने कहा कि मात्र 10 मिनिट में ड्रोन से 1 एकड़ क्षेत्र में नैनो यूरिया या कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। भारत सरकार ने भी खेती में ड्रोन के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नीति घोषित की है। बेरोजगार युवाओं को ड्रोन संचालन का प्रशिक्षण कौशल विकास केन्द्रों के माध्यम से दिया जाएगा। ड्रोन खरीदने के लिए अनुदान के साथ ऋण बैंकों से दिलाया जाएगा ताकि खेतों में कीटनाशक व उर्वरक का छिड़काव ड्रोन के माध्यम से कर युवा आय प्राप्त कर सके और आत्मनिर्भर बन सकें।

ड्रोन से यह होगा फायदा

» किसानों को बड़े रकवे में कम समय में छिड़काव करने में मदद मिलेगी।

» कम मजदूरी में गन्ना ओर मक्का जैसी फसलों में छिड़काव हो सकेगा।

» छिड़काव के दौरान खेतो में जहरीले जंतुओं से बचा जा सकेगा।

» इस तकनीकी से बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होने।

» कीटनाशक दवाओं का फसलों पर तय मात्रा में छिड़काव हो सकेगा।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की किसानों के प्रति संवेदनशीलता

किसानों को तकनीक से जोड़ने की जरूरत हैः नरेंद्र सिंह तोमर

भोपाल। संवाददाता

बैतूल जिले से किसानों को बीमा राशि का वितरण कार्यक्रम में वर्चुअल जुड़े केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि यह पहला मौका है जब किसानों को इतनी बड़ी राशि दी गई है। इसके लिए मुख्यमंत्री और उनकी पूरी टीम बधाई की पात्र हैं। हम सब मध्यप्रदेश के निवासी हैं। हम जानते हैं कि 15 साल में शिवराज चौहान के नेतृत्व में खेती किसानी के क्षेत्र में प्रगति हुई है वह देश के मानचित्र में उल्लेखित है। मुख्यमंत्री की किसानों के प्रति संवेदनशीलता, अनुभव के आधार पर किसानों की कठिनाई को समझा। सिंचाई के रकबे में बढोत्तरी की। बिजली, किसानों को शून्य प्रतिशत पर कर्ज दिया। कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए आमूलचूल बदलाव किए जिसका परिणाम आज दिखता है। जब देश में कृषि के क्षेत्र में बात होती है तो मध्यप्रदेश अग्रणी भूमिका में आता है। इसके लिए किसानों का अभिनंदन और सरकार के साथ कृषि क्षेत्र में काम कर रही टीम बधाई की पात्र हैं। हमारे लिए खुशी की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह हैं। जब एक और एक मिलते हैं तो वे 11 हो जाते हैं। इस कारण लगातार विकास हो रहा है। तोमर ने कहा कि

किसान सम्मान निधि किसी किसान ने नहीं मांगी थी। देश के साढ़े 11 करोड़ किसानों को राशि दे रहे हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा का लाभ लेने की नौबत भगवान न करे बने। पर किसान कितना परिश्रम करे प्रकृति पर बस नही है। किसानों को मजबूत कवच होना चाहिए। इस कारण फसल बीमा है। आज जो कार्यक्रम हो रहा है। उसमें किसानों के द्वारा 888 करोड़ का प्रीमियम जमा किया गया है। इसके बदले में किसानों को 7861 करोड़ रुपए की भरपाई की जा रही है।

बना रहे विभिन्न तकनीक

प्रदेश कृषि और केंद्र की योजनाओं के क्रियान्वयन में कर रहा है। खाद्यान्न, बागवानी के क्षेत्र में प्रदेश में बेहतर काम हो रहा है। गांव में अधोसंरचना विकसित करने के लिए मांग होती थी। आत्मनिर्भर पैकेज के लिए प्रधानमंत्री ने कृषि क्षेत्र के लिए करोड़ों की राशि डेढ़ लाख करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान किया गया है। कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों को तकनीकी से जोड़ने की जरूरत है। विभिन्न तकनीक बनाई जा रही हैं।

ड्रोन पालिसी जारी कर दी

कृषि मंत्री ने कहा कि केंद्र ने ड्रोन पालिसी जारी कर दी है। इसमें कृषि मंत्रालय ने खेती में इसके उपयोग के लिए पालिसी बनाई है। कोई कंपनी यदि कार्य करती है तो शत प्रतिशत अनुदान पर ड्रोन उपलब्ध कराएंगे। जो युवा ड्रोन लेकर किसानों की मदद करना चाहते हैं तो उन्हें रोजगार के साथ अनुदान का प्रविधान सरकार ने किया है। इसका लाभ हमें लेना चाहिए। फसल बीमा कंपनी और सरकार को प्रयास करना है कि जहां तक फसल बीमा की रोशनी नहीं पहुंची है वहां तक लाभ पहुंचाएं। इस कार्य में भी देश में प्रदेश अग्रणी बने।

ई-उपार्जन पोर्टल पर चना एवं मसूर का पंजीयन भी प्रारंभ

संवाददाता, भोपाल।

रबी वर्ष 2021-22 के लिए भारत सरकार की समर्थन मूल्य योजना अन्तर्गत उपार्जन पोर्टल पर 5 मार्च 2022 तक चना एवं मसूर के पंजीयन गेहूं पंजीयन की तरह ही किए जा सकते हैं। समस्त किसान जिन्होंने चना एवं मसूर की बोवनी की हो, वे शासकीय अवकाश दिवसों को छोडकर सु सात बजे से रात्रि नौ बजे तक निर्धारित लिंक पर जाकर पंजीयन करें। पंजीयन के लिए किसान स्वयं के मोबाईल, कम्प्यूटर तथा ग्राम,जनपद पंचायत, तहसील कार्यालय के सुविधा केंद्रों, सहकारी समिति द्वारा संचालित केन्द्रों, एमपी ऑनलाइन कियोस्क एवं साइवर कैफे पर आवश्यक दस्तावेजों के माध्यम से करवा सकते हैं। पंजीयन में भू-स्वामियों के लिये भूमि संबंधी दस्तावेज आधार कार्ड, आधार नम्बर से पंजीकृत मोबाईल नम्बर एवं अन्य फोटो पहचान पत्र तथा सिकमी एवं वन पट्टाधारी किसान वनाधिकारी पट्टाधारी, सिकमीदार को आधार कार्ड, आधार नम्बर से पंजीकृत मोबाईल नम्बर एवं वनपट्टा एवं सिकमी अनुबंध की प्रति दस्तावेज आवश्यक होंगे। उपार्जित फसल का भुगतान उनके आधार नम्बर से लिंक बैंक खाते में सीधे किया जाएगा।

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, राम नरेश वर्मा-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
राहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
बैतूल, सतीष साहू-8982777449
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पताः- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

पशुपालन मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने किया आह्वान

बकरी पालन से किसान बढ़ाएं अपनी आय

बड़वानी। राष्ट्रीय कीटनाशी संस्थान हैदराबाद एवं कृषि विज्ञान केंद्र बड़वानी के संयुक्त तत्वाधान में जिले के कृषि आदान विक्रेताओं के लिए 12 सप्ताह के सर्टिफिकेट कोर्स के समापन समारोह में प्रदेश के पशु पालन मंत्री प्रेम सिंह पटेल ने सिरकत की। यह कोर्स केंद्र के प्रमुख डॉ. एसके बड़ोदिया के मार्गदर्शन में विगत 12 सप्ताह से आयोजित किया जा रहा था। समारोह में मंत्री ने आह्वान किया की बकरीपालन, मछलीपालन, मुर्गीपालन व मधुमक्खी पालन का जिले में विस्तार किया जाए। जिससे शासन की योजनाओं का लाभ लेकर किसान अपनी आय को बढ़ा सकें। साथ ही आदान विक्रेताओं से प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त की गयी तकनीकी जानकारी को जिले के किसानों तक पहुंचाने की बात कही। ताकि वे अपनी कृषि कार्यप्रणाली में तकनीकी के माध्यम से लाभ कमा सकें। मंत्री ने बकरी पालन को व्यवसायिक रूप से अपनाने को कहा और आदिवासी जिले में किसानों के लिए बकरी पालन एक अच्छा और सफल व्यवसाय बन सकता है, क्योंकि बकरी की सीमित आवश्यकता होती है व इससे लाभ प्राप्त कर अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है। इसे अपनाकर जिले के किसान लाभान्वित हों सकते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादकः अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेलः- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)